Series

कोड नं.

रोल नं.

विद्यार्थी उत्तर-पुस्तिका में मुख पृष्ठ पर कोड नं. अवश्य लिखें।

- *कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ - 15 हैं।*
- *प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।*
- *कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 18 प्रश्न हैं।*
- *कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।*
- *इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में - बजे किया जाएगा। - बजे से - बजे तक छात्र केवल प्रश्नपत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।*

(पाठ्यक्रम– ब) सकंलित परीक्षा

कक्षा :- दसवीं

विषय :- हिंदी (ब)

निर्धारित समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक– 80

निर्देश :-

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख ग और घ।
2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

संकलित परीक्षा (SA) – II

कक्षा :- दसवीं

विषय :- हिंदी (ब)

समय :- 3 घण्टे **अधिकतम अंक :- 80**

प्र01 अपठित गद्यांश :-

जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा, उसे नाखून की ज़रूरत थी। उसकी जीवन-रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे-धीरे वे अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। पत्थर के ढेले और पेड़ की डाले काम में लाने लगा। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। जिनके पास लोहे के अस्त्र और शस्त्र थे, वे विजयी हुए। इतिहास आगे बढ़ा। पलीते वाली बंदूकों ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों ने इतिहास को किस कीचड़-भरे घाट तक घसीटा है यह सबको मालूम है। नख-धर मनुष्य अब एटम-बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है। पर उसके नाखून अब भी बढ़ रहे हैं। अब भी प्रकृति मनुष्य को उसके भीतर वाले अस्त्र से वंचित नहीं कर रही है, अब भी वह याद दिला देती है कि तुम्हारे नाखून को भुलाया नहीं जा सकता। तुम वही लाख वर्ष पहले के नखदंतावलंबी जीव हो- पशु के साथ एक ही सतह पर विचरने वाले और चरने वाले।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(क) मनुष्य को नाखून क्यों जरूरी थे? 1

(i) शस्त्र बनाने के लिए
(ii) अंगुलियों को सुंदर बनाने के लिए
(iii) अंगुलियों की सुरक्षा के लिए
(iv) जीवन-रक्षा के लिए

(ख) कुछ समय बाद मनुष्य किन बाहरी चीजों का सहारा लेने लगा? 1

(i) पत्थर के ढेले व पेड़ की डाले
(ii) पत्थर के बर्तन व वृक्ष की जड़े।
(iii) नाखून से बने हथियारों
(iv) जानवरों के दाँतों से बने हथियारों

(ग) मनुष्य अब किस पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है? 1

(i) परम पिता परमेश्वर पर
(ii) एटम बम
(iii) वज्र

(iv) नाखून

(घ) प्रकृति मनुष्य को कौन-से अस्त्र से वंचित नहीं कर रही है? 1

(i) वज्र

(ii) तन

(iii) हस्त

(iv) नख

(ङ) लेखक ने मनुष्य को कैसा जीव बताया है? 1

(i) संघर्ष करने वाला जीव

(ii) मुद्ध करने वाला जीव

(iii) नखदंतावलंबी जीव

(iv) परजीवी जीव

प्र02 अपठित गद्यांश :-

विविध धर्म एक ही जगह पहुँचाने वाले अलग-अलग रास्ते हैं। एक ही जगह पहुँचने के लिए हम अलग-अलग रास्तों से चलें तो इसमें दुख का कोई कारण नहीं है। सच पूछो तो जितने मनुष्य हैं उतने ही धर्म भी हैं। हमें सभी धर्मों के प्रति समभाव रखना चाहिए। इसमें अपने धर्म के प्रति उदासीनता आती हो, ऐसी बात नहीं, बल्कि अपने धर्म पर जो प्रेम है उसकी अधता मिटती है। इस तरह वह प्रेम ज्ञानमय और ज्यादा सात्विक तथा निर्मल बनता है। बापू इस विश्वास से सहमत नहीं थे कि पृथ्वी पर एक धर्म हो सकता है या होगा। इसलिए वे विविध धर्मों में पया जाने वाला तत्व खोजने की और इस बात को पैदा करने की कि विविध धर्मावलंबी एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता का भाव रखें, कोशिश कर रहे थे। उनकी सम्मति थी कि संसार के धर्म ग्रंथों को सहानुभूतिपूर्वक पढ़ना प्रत्येक सभ्य पुरूष और स्त्री का कर्तव्य है। अगर हमें दूसरे धर्मों का वैसा आदर करना है जैसा हम उनसे अपने धर्म का कराना चाहते हैं तो संसार के सभी धर्मों का आदरपूर्वक अध्ययन करना हमारा एक पवित्र कर्म हो जाता है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(क) गद्यांश में कुल कितने धर्म बताए गए हैं? 1

(i) चार

(ii) प्रमुख सात धर्म

(iii) भारत में प्रमुख चार

(iv) जितने लोग हैं उतने धर्म

(ख) अपने धर्म पर जो प्रेम है उसी अंधता कैसे मिटती है? 1

(i) अन्य धर्म स्वीकार करने पर

(ii) धर्म के विरूद्ध कोई भी कार्य न करने पर

(iii) सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखने पर

(iv) अपने धर्म को श्रेष्ठ समझने पर

(ग) सभी धर्मों के लिए समान भावना होने पर अपने धर्म के प्रति जो प्रेम है वह क्या बन जाता है? 1

(i) सर्वश्रेष्ठ व परम शक्तिशाली बन जाता है

(ii) अधिक सात्विक ज्ञानमय और निर्मल बन जाता है।

(iii) अलग-अलग रास्ते एक ही बन जाते हैं।

(iv) सबका कल्याण करने वाला बन जाता है।

(घ) बापू किस बात की कोशिश करते रहे? 1

(i) सभी लोग कम से कम दो धर्मग्रंथ अवश्य पढ़ें।

(ii) देश में कोई धर्म हिंदू धर्म से श्रेष्ठ न हो।

(iii) ऐसा तत्व मिल जाए जिससे एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता का भाव आ जाए।

(iv) हिंदू धर्म ज्ञानमय, सात्विक तथा निर्मल हो जाए।

(ङ) बापू ने किसे सबके लिए एक पवित्र काम माना है? 1

(i) एक ही रास्ते पर चलना

(ii) अपने-अपने धर्म को पवित्र मानना

(iii) सभी धर्मों का आदरपूर्वक अध्ययन

(iv) अपने धर्म का अच्छी तरह अध्ययन

प्र03 अपठित काव्यांश :-

तन समर्पित, मन समर्पित
और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
'माँ तुम्हारा श्रण बहुत है, मैं अकिंचन
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन–
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना समर्पण।
गान अर्पित, प्राण अर्पित
रक्त का कण-कण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँच दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित
आयु का क्षण-क्षण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार-घर, आँगन, क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।
ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण-तृण समर्पित।

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए।

(क) काव्यांश का उपर्युक्त शीर्षक होगा। 1

(i) ऋृण समर्पित

(ii) थाल समर्पित

(iii) और भी दूँ

(iv) तलवार समर्पित

(ख) कवि किसे सब कुछ समर्पित कर रहा है? 1

(i) देश की पताका को

(ii) देश की भूमि को

(iii) देश की जनसंख्या को

(iv) देश की सरकार को

(ग) कवि थाल में क्या सजाकर लाना चाहता है? 1

(i) छप्पन भोग

(ii) पुष्प

(iii) भाला

(iv) अपना माथा

(घ) कवि अपने दोनों हाथों में क्या देने के लिए कहता है? 1

(i) दाएं हाथ में ध्वज और बाएं में तलवार

(ii) दाएँ हाथ में तलवार और बाएं में झंड़ा

(iii) सीधे हाथ में झंडा और बाएँ हाथ में ध्वज

(iv) सीधे हाथ में तलवार और बाएं में सुमन

(ङ) सब कुछ समर्पित करने के बावजूद कवि क्या कहता है? 1

(i) मेरे पास अब कुछ नहीं बचा।

(ii) सब कुछ जो तुमने दिया था वह तुम्हें वापस कर दिया।

(iii) सब कुछ समर्पित करने पर ही मेरा ऋृण समाप्त हुआ।

(iv) तुझे कुछ और भी दूँ।

प्र04 अपठित काव्यांश :-

कुछ भी बन, बस कायर मत बन!
ठोकर मार, पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!
ले-दे कर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून - पसीना!
कुछ न करेगा? किया करेगा-

रे मनुष्य – बस कातर क्रंदन?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!
'युद्धं देहि' कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर!
या तो जीत प्रीति के बल पर,
या तेरा पथ चूमे तस्कर!
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!
तेरी रक्षा का न मोल है,
पर तेरा मानव अमोल है!
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है!
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण।
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!

उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए।

(क) कवि किसे ठोकर मारने की बात कहता है? 1

(i) पाहुन
(ii) बाधाएँ
(iii) आँसू
(iv) प्रतिहिंसा

(ख) कवि किस प्रकार के जीवन को जीवन नहीं मानता? 1

(i) खून-पसीना बहाने वाला जीवन
(ii) हिंसा न करने वाला जीवन
(iii) रक्षा न कर पाने वाला जीवन
(iv) ले-दे कर जीने वाला जीवन

(ग) कवि ने अधिक अपवित्र किसे कहा है? 1

(i) पाहन
(ii) कायरता
(iii) क्रंदन
(iv) पामर

(घ) 'कुछ न करेगा? किया करेगा-रे मनुष्य-बस कातर क्रंदन' पंक्ति में कौन-सा भाव प्रमुख है। 1

(i) निष्क्रियता पर व्यंग्य करने का
(ii) कर्म पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा
(iii) बाधाओं को दूर कर आगे बढ़ने का

(iv) निराशा त्याग कर प्रसन्न रहने का

(ङ) कवि किस पर सब कुछ समर्पित करने के लिए कह रहा है? 1

(i) दुष्ट पर

(ii) कायर पर

(iii) दुर्बल पर

(iv) मानव पर

खण्ड - 'ख'

प्र05 **(i) हमेशा झूठ बोलने वाले तुम आज सच कैसे बोल रहे हो? वाक्य में सर्वनाम पद बंध है :-** 1

(क) हमेशा झूठ बोलने वाले

(ख) बोलने वाले तुम

(ग) सच कैसे बोल रहे हो

(घ) हमेशा झूठ बोलने वाले तुम

(ii) 'वह कमरे में सो रही है।' रेखांकित पद का परिचय है- 1

(क) सर्वनाम, पुरूषवाचक, अन्य पुरूष, एकवचन, स्त्रीलिंग

(ख) सर्वनाम, उत्तम पुरूष, एकवचन, पुल्लिंग

(ग) सर्वनाम, उत्तम पुरूष, एकवचन, स्त्रीलिंग

(घ) सर्वनाम, पुरूषवाचक, अन्य पुरूष, एकवचन, पुल्लिंग

(iii) मैं <u>इस सप्ताह के अंत तक</u> कार्य पूरा कर लूँगा। रेखांकित में पदबंध का भेद है- 1

(क) सर्वनाम

(ख) विशेषण

(ग) क्रिया विशेषण

(घ) क्रिया

(iv) राजीव सारी <u>पुस्तके</u> पढ़ चुका है। रेखांकित पद का परिचय है- 1

(क) संज्ञा, भाववाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्म कारक

(ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक

(ग) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्म कारक

(घ) संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्म कारक

प्र06 (i) **परीक्षा कठिन है इसलिए मन लगाकर पढ़ाई करो।' रचना की दृष्टि से वाक्य का भेद है-** 1

(क) सरल वाक्य

(ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य

(घ) इच्छावाचक वाक्य

(ii) निम्नलिखित में मिश्र वाक्य है- 1

(क) वसुधा आते ही खाने बैठ गई

(ख) जैसे ही वसुधा आई, वैसे ही खाने बैठ गई।

(ग) वसुधा आई और वह खाने बैठ गई।

(घ) वसुधा खाने बैठ गई।

(iii) निम्नलिखित में संयुक्त वाक्य है- 1

(क) वर्षा होने पर नृत्य करने लगा।

(ख) जैसे ही वर्षा हुई वैसे ही मोर नृत्य करने लगा।

(ग) वर्षा हुई और मोर नृत्य करने लगा।

(घ) ज्योंहि वर्षा शुरू हुई त्योंहि मोर नृत्य करने लगा।

(iv) 'मैं इस जगह आता हूँ। मुझे मेरे मित्र की याद आती है।' इन वाक्यों से बना मिश्रित वाक्य है- 1

(क) इस जगह आने पर मुझे मेरे मित्र की याद आती है।

(ख) मेरा मित्र याद आता है इस जगह आने पर।

(ग) मैं जब-जब इस जगह आता हूँ, तब-तब मुझे मेरा मित्र याद आता है।

(घ) मैं इस जगह आता हूँ और मुझे मेरे मित्र की याद आती है।

प्र07 **(i) 'व्याप्त' का संधि-विच्छेद है-**

(क) व्य + अप्त

(ख) व्य + आप्त

(ग) वि + आप्त

(घ) वि + अप्त

(ii) 'लघु + ऊर्मि' की संधि है-

(क) लघूर्मि

(ख) लघुर्मि

(ग) लऊर्मि

(घ) लघिर्मि

(iii) 'रेखांकित' समस्त पद का विग्रह है-

(क) रेखा से कृत

(ख) रेखा का अंकित

(ग) रेखा से अंकित

(घ) रेखा को अंकित

(iv) 'भला है जो मानस' का समस्त पद है-

(क) भलानस

(ख) भलमानस

(ग) भमानस

(घ) भलामानस

प्र08 **(i) 'बच्चों को शोर मचाते देखकर शिक्षक महोदय ..... हो गए। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति करें-**

(क) गदगद होना

(ख) आग बबूला होना

(ग) बेराह होना

(घ) नत-मस्तक होना

(ii) गुस्से में सोनू ने घर तो छोड़ दिया लेकिन जल्द ही उसे ..... पता लग गया। उपयुक्त लोकोक्ति से रिक्त स्थान की पूर्ति करें। 1

(क) आम के आम गुठली का दाम

(ख) बंदर कया जाने अदरक का स्वाद

(ग) अपना हाथ जगन्नाथ

(घ) आटे दाल का भाव जानना

(iii) 'फूटी आँख नहीं सुहाना' मुहावरे का अर्थ है- 1

(क) कुछ भी दिखाई न देना

(ख) जरा भी अच्छा न लगना

(ग) एक समान मानना

(घ) क्रोध में अंधा हो जाना

(iv) 'आटे के साथ घुन पिसना' लोकोक्ति का अर्थ है- 1

(क) सारा काम बिगाड़ देना

(ख) गलती करने के बाद पश्चाताप करना।

(ग) दोषी के साथ निर्दोष होते हुए नुकसान उठाना

(घ) स्वयं अनुभव के बाद ही सच्चाई समझ आती है।

प्र09 **(i) निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है-** 1

(क) दादा की थाली में रखकर भोजन दो।

(ख) दादा को भोजन दो थाली में रखकर।

(ग) भोजन दादा को थाली में दो रखकर।

(घ) थाली में भोजन रखकर दादा को दो।

(ii) निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य हैं- 1

(क) हमने यह काम करना है।

(ख) हमें यह काम करना है।

(ग) यह काम हमने करना है।

(घ) यह काम करना है हमें।

(iii) निम्नलिखित में अशुद्ध वाक्य हैं- 1

(क) ये कहानियाँ किसने लिखी हैं?

(ख) फल काटकर अंजली को खिलाओ।

(ग) यह असली गाय का दूध है।

(घ) तुलसीदास-रचित भजन सुनाओ।

(iv) निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है-

(क) हम खाना खा लिए हैं।

(ख) भाई कहा कि पढ़ लो।

(ग) मैं यह काम नहीं किया।

(घ) मुझे आम की चटनी खानी है।

खण्ड – 'ग'

प्र010 किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनकर लिखिए।

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(i) भूख से व्याकुल होते हुए भी किसने अपना भोजन भूखे व्यक्ति को दे दिया? 1

(क) कर्ण

(ख) रंतिदेव ने

(ग) दधीचि ने

(घ) इंद्रदेव ने

(ii) 'अनादि जीव' का आशय है- 1

(क) अमर जीव

(ख) नश्वर जीव

(ग) लुप्त जीव

(घ) पवित्र जीव

(iii) दधीचि ने दूसरों के हित के लिए क्या किया? 1

(क) जाल बनाकर दिया

(ख) स्वमांस दान किया

(ग) हड्डियों का ढाँचा दान किया

(घ) करस्थ थाल दे दिया।

(iv) शरीर को अनित्य क्यों कहा गया है? 1

(क) शरीर प्रतिदिन नहीं बनता

(ख) शरीर में प्रतिदिन बदलाव आता है।

(ग) शरीर शाश्वत है।

(घ) शरीर नश्वर है।

(v) प्रस्तुत काव्यांश में किसके महत्त्व को दर्शाया गया है? 1

(क) वीर कर्ण की शक्ति को

(ख) महापुरूषों के परोपकार को

(ग) मानव की मृत्यु को

(घ) दधीचि ऋृण के तप को

अथवा

दु:ख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करूणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।।
मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करूणामय)
तरने को हो शक्ति अनामय।

(i) **'व्यथित चित्त' का अर्थ है-** 1

(क) व्यर्थ चिंता
(ख) बहुत चिंता
(ग) दुखी मन
(घ) संयमी हृदय

(ii) **कवि ने करूणामय किसे कहा है?** 1

(क) संघर्ष को
(ख) विपत्तियों को
(ग) बाधाओं को
(घ) परमात्मा को

(iii) कवि अपने दुख को कैसे दूर करना चाहता है? 1

(क) ईश्वर की सहायता से
(ख) स्वयं संघर्ष करके
(ग) षडयंत्र रचकर
(घ) सगे-संबंधियों की सहायता से

(iv) कवि ईश्वर से क्या प्रार्थना करके नहीं मांग रहा है? 1

(क) हर दिन मेरी रक्षा करो
(ख) मुझे संघर्ष करने की ताकत दो
(ग) तैरने की शक्ति दो
(घ) दुख को जीतने का बल दो

(v) **सहायता करने वाला नहीं मिलने पर कवि क्या चाहता है?** 1

(क) विपत्तियाँ स्वत: दूर हो जाएं
(ख) सहायता नहीं करने वाले दुखी हो।
(ग) अपना आत्म बल न हिले
(घ) सहायता नहीं करने वाले की हानि हो।

प्र011 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए। 2½+2½=5

(क) ख्यूक्रिन मुआवजा क्यों मांग रहा था? 'गिरगिट' कहानी के आधार पर स्पष्ट करें।

(ख) लेखक के मित्र ने जापान में मानसिक रोग बढ़ने के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

(ग) वज़ीर अली कौन था? उसने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किए?

(घ) 'टी - सेरेमनी' की किन विशेषताओं को पाठ में उजागर किया गया है और इसमें शामिल होकर लेखक ने क्या महसूस किया?

प्र012 प्रशासन में व्याप्त किन विसंगतियों को 'गिरगिट' कहानी में दर्शाया गया है? अपने आस-पास ऐसी विसंगतियों को क्या आपने देखा है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है।' गत कुछ वर्षों में घटित किसी घटना का उल्लेख करते हुए कथन की पुष्टि करें।

प्र013 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते है। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम-उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़े और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) 'गांधी जी ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।' इसका क्या आशय है, स्पष्ट करें। 2

(ख) व्यवहारवादी लोग समाज को गिराते हैं- कैसे? 2

(ग) शाश्वत मूल्य किनकी देन हैं? 1

अथवा

कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी जमीन को हथिया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार सिमटता जा रहा था। पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी तो उकड़ूँ बैठ गया। फिर खड़ा हो गया.... जब खड़े रहने की जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। परंतु आता है तो रोकना मुश्किल हो जाता है, और यही हुआ, उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आकर गिरा, दूसरा बाद्रां में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट-वे-ऑफ़ इंडिया पर टूट-फूटकर सैलानियों का नज़ारा बना बावजूद कोशिश, वे फिर चलने-फिरने के काबिल नहीं हो सके।

(क) बिल्डरों द्वारा समुद्र को पीछे धकेलने के पीछे क्या उद्देश्य था? 2

(ख) 'जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही कम गुस्सा आता है।' गद्यांश के आधार पर आशय स्पष्ट करें। 2

(ग) समुद्र के गुस्से का प्रभाव कहाँ पर दिखा? 1

प्र014 (क) 'कर चले हम फ़िदा' कविता क्या संदेश देती है? 2

(ख) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता के माध्यम से कवयित्री ने किस बात की प्रेरणा देने का प्रयास किया है? 2

(ग) बिहारी कवि के अनुसार गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं? 1

प्र015 पी. टी. साहब की 'शाबास' फौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

टोपी और इफ़्फन की दादी अलग-अलग महजब और जाति के थे पर एक अदृश्य अटूट रिश्ते से बंधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार स्पष्ट करें।

प्र016 दस अक्टूबर सन् पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्त्व रखता है? 2

खण्ड - 'घ'

प्र017 दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखें। 5

(क) **<u>परिश्रम सफलता का मूल मंत्र :-</u>**

- परिश्रम का महत्त्व
- निरंतरता से विकास संभव
- शारीरिक व मानसिक संभव
- सफलता प्राप्त करने की सुनिश्चितता।

(ख) **<u>कामकाजी नारी के समक्ष चुनौतियाँ :-</u>**

- नारी के लिए नौकरी की आवश्यकता
- आत्मनिर्भर महिलाओं की स्थिति
- घर और नौकरी के बीच सामंजस्य स्थापित करना
- सुरक्षा का प्रश्न
- सामाजिक मानसिकता का प्रभाव।

(ग) **<u>मार गई महँगाई :-</u>**

- वर्तमान में स्थिति
- आम लोगों पर प्रभाव
- बेरोजगारी व कम वेतन में जीना मुश्किल
- सरकार का रवैया
- खाद्य पदार्थों में कमी
- समाधान हेतु सुझाव

प्र018 अपने विकास क्षेत्र के पास नया बस-स्टॉप बनवाने का अनुरोध करते हुए परिवहन निगम के प्रबंधक को पत्र लिखिए। 5

अथवा

कानपुर से दिल्ली आते समय आपका सामान रेल में चोरी हो गया, इसकी रिपोर्ट दर्ज करवाने हेतु कानपुर के रेलवे पुलिस अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर संकेत

उ01 (क) (iv)
(ख) (i)
(ग) (ii)
(घ) (iv)
(Ä) (iii)

उ02 (क) (iv)
(ख) (iii)
(ग) (ii)
(घ) (iii)
(ङ) (iii)

उ03 (क) (iii)
(ख) (ii)
(ग) (iv)
(घ) (ii)
(Ä) (iv)

उ04 (क) (ii)
(ख) (iv)
(ग) (ii)
(घ) (i)
(ङ) (iv)

उ05 (i) (घ)
(ii) (क)
(iii) (ग)
(iv) (घ)

उ06 (i) (ग)
(ii) (ख)
(iii) (ग)
(iv) (ग)

उ07 (i) (ग)
(ii) (क)
(iii) (ग)
(iv) (घ)

उ08 (i) (ख)
(ii) (घ)
(iii) (ख)
(iv) (ग)

उ09 (i) (घ)

(ii) (ख)
(iii) (ग)
(iv) (घ)

उ010 (i) (ख)
(ii) (क)
(iii) (ग)
(iv) (घ)
(v) (ख)

अथवा

उ05 (i) (ग)
(ii) (घ)
(iii) (ख)
(iv) (क)
(v) (ग)